Qaume Loot ki Tabahkariyan (Hindi)

क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां

- पथ्थर ने पीछा किया !
- सुलगती लाशें
- क़ौमे लूत़ के क़ब्रिस्तान में
- पेश इमाम की करामत
- ख़ौफ़नाक सांप की ज़र्ब
- शह्वत से बचने के 12 म-दनी फूल
- नाम रखने के बारे में 18 म-दनी फूल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

مکتبۃ المدینہ
SC1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرَف ج١ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

www.dawateislami.net

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुसत़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساكر ج٥١ ص١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

(क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां)

येह रिसाला **(क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मद आबाद-1, गुजरात,

फ़ोन : 09374031409

E-mail : tarajimhind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (48 सफ़्हात) आख़िर तक पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप ख़ौफ़े आख़िरत से लरज़ उठेंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, **दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने **तक़र्रुब** निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे । (تِرمِذی ج۲ ص۲۷ حدیث٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के भतीजे

ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (29 ज़ी क़ा'दह 1432 सि.हि./ 27-10-11) में फ़रमाया था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।
-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के भतीजे हैं, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام **सदूम** के नबी थे । और आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के साथ हिजरत कर के मुल्के **शाम** में आए थे और ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की बहुत ख़िदमत की थी । ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की दुआ़ से आप नबी बनाए गए ।

(नूरुल इरफ़ान, स. 255)

दुन्या में सब से पहले शैत़ान ने बद फ़े'ली करवाई

दुन्या में सब से पहले बद फ़े'ली शैत़ान ने करवाई, वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की क़ौम में अम्रदे ह़सीन या'नी ख़ूब सूरत लड़के की शक्ल में आया और उन लोगों को अपनी जानिब माइल किया यहां तक कि गन्दा काम करवाने में काम्याब हो गया और इस का उन को ऐसा चस्का लगा कि इस बुरे काम के आ़दी हो गए और नौबत यहां तक पहुंची कि औ़रतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी "ख़्वाहिश" पूरी करने लगे ।

(ماخوذ از مُکاشَفَۃُ القلوب ص۷٦)

सय्यिदुना लूत़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने समझाया

ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने उन लोगों को इस फ़े'ले बद से मन्अ़ करते हुए जो बयान फ़रमाया इस को पारह 8 **सू-रतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 80 और 81 में इन अल्फ़ाज़ में ज़िक्र किया गया है :

اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या वोह बे ह़याई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की । तुम तो मर्दों के पास शह्वत से जाते हो औ़रतें छोड़ कर, बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गए ।

ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दुन्या व आख़िरत की भलाई पर मुश्तमिल बयाने आ़फ़िय्यत निशान को सुन कर बे ह़या क़ौम ने बजाए सरे तस्लीम ख़म करने के जो बे बाकाना जवाब दिया उसे पारह 8 **सू-रतुल आ'राफ़** आयत 82 में इन लफ़्ज़ों के साथ बयान किया गया है :

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۸۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस की क़ौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं ।

क़ौमे लूत़ पर लरज़ा ख़ेज़ अ़ज़ाब नाज़िल हो गया

जब क़ौमे लूत़ की सरकशी और ख़स्लते बद फ़े'ली क़ाबिले हिदायत न रही तो **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आ गया, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चन्द फ़िरिश्तों के हमराह अम्रदे ह़सीन या'नी ख़ूब सूरत लड़कों की सूरत में मेहमान बन कर ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास पहुंचे । इन मेहमानों के ह़ुस्नो जमाल और क़ौम की बदकारी की ख़स्लत

के ख़याल से ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام निहायत मुशव्वश या'नी फ़िक्र मन्द हुए । थोड़ी देर बा'द क़ौम के बद फ़े'लों ने ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मकाने आ़लीशान का मुह़ा-सरा कर लिया और इन मेहमानों के साथ बद फ़े'ली के बुरे इरादे से दीवार पर चढ़ने लगे । ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने निहायत दिलसोज़ी के साथ उन लोगों को समझाया मगर वोह अपने बद इरादे से बाज़ न आए । आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **मु-तफ़क्किर** व रन्जीदा देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कहा : **या नबिय्यल्लाह !** आप ग़मगीन न हों, हम फ़िरिश्ते हैं और इन बदकारों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब ले कर उतरे हैं, आप मुअमिनीन और अपने अहलो इ़याल को साथ ले कर सुब्ह़ होने से पहले पहले इस बस्ती से दूर निकल जाइये और ख़बरदार ! कोई शख़्स पीछे मुड़ कर बस्ती की त़रफ़ न देखे वरना वोह भी इस अ़ज़ाब में गरिफ़्तार हो जाएगा । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने घर वालों और मोमिनों को हमराह ले कर बस्ती से बाहर तशरीफ़ ले गए । फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस शहर की पांचों बस्तियों को अपने परों पर उठा कर आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हुए और कुछ ऊपर जा कर उन बस्तियों को ज़मीन पर उलट दिया । फिर उन पर इस ज़ोर से पथ्थरों का मींह बरसा कि क़ौमे लूत़ की लाशों के भी परख़्चे उड़ गए ! ऐ़न उस वक़्त जब कि येह शहर उलट पलट हो रहा था ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की एक बीवी जिस का नाम ''वाइ़ला'' था जो कि दर ह़क़ीक़त मुनाफ़िक़ा थी और क़ौम के बदकारों से **मह़ब्बत** रखती थी उस ने

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

पीछे मुड़ कर देख लिया और उस के मुंह से निकला : "हाए रे मेरी क़ौम !" येह कह कर खड़ी हो गई फिर अ़ज़ाबे इलाही का एक पथ्थर उस के ऊपर भी गिर पड़ा और वोह भी हलाक हो गई । पारह 8 **सू-रतुल आ'राफ़** आयत 83 और 84 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ होता है :

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۸۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औ़रत, वोह रह जाने वालों में हुई । और हम ने उन पर एक मींह बरसाया, तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुजरिमों का ।

बदकार क़ौम पर बरसाए जाने वाले हर पथ्थर पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस पथ्थर से हलाक हुवा ।

(माख़ूज़ अज़ अ़जाइबुल कुरआन, स. 110 ता 112, **تفسیرِ صاوی ج۲ص** ۶۹۱)

पथ्थर ने पीछा किया !

ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम का एक ताजिर उस वक़्त कारोबारी तौ़र पर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا आया हुवा था, उस के नाम का **पथ्थर** वहीं पहुंच गया मगर फ़िरिश्तों ने येह कह कर रोक लिया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ह़रम** है । चुनान्चे वोह **पथ्थर** 40 दिन तक **ह़रम** के बाहर ज़मीन व आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ (या'नी लटका) रहा जूं ही वोह ताजिर फ़ारिग़ हो कर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से निकल कर **ह़रम** से बाहर हुवा कि वोह **पथ्थर** उस पर गिरा और वोह वहीं हलाक हो गया । (مُکاشَفۃُ الْقُلوب ص ۷۶ماخوذاً)

सुअर इग़्लाम बाज़ होता है

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : फ़ाह़िशा (बे ह़याई) वोह गुनाह है जिसे अ़क़्ल भी बुरा समझे। कुफ़्र अगर्चे बद तरीन गुनाहे कबीरा है मगर इसे रब (عَزَّوَجَلَّ) ने फ़ाह़िशा (या'नी बे ह़याई) न फ़रमाया क्यूं कि नफ़्से इन्सानी इस से घिन नहीं करती। बहुतेरे आ़क़िल (अ़क़्ल मन्द कहलाने वाले) इस में गरिफ़्तार हैं मगर इग़्लाम (या'नी बद फ़े'ली) तो ऐसी बुरी चीज़ है कि जानवर भी इस से **मु-तनफ़्फ़िर** हैं सिवाए **सुअर** के। लड़कों से इग़्लाम ह़रामे क़त़्ई है इस के ह़राम होने का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) **काफ़िर** है। लूत़ी (या'नी इग़्लाम बाज़) मर्द, **"औ़रत"** के क़ाबिल नहीं रहता। (नूरुल इरफ़ान, स. 255)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा गुनाह

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक मर्तबा शैत़ान से पूछा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से बढ़ कर कौन सा गुनाह ना पसन्द है ? इब्लीस बोला : **अल्लाह** तआ़ला को येह गुनाह सब से ज़ियादा ना पसन्द है कि मर्द, मर्द से बद फ़े'ली करे और औ़रत, औ़रत से अपनी ख़्वाहिश पूरी करे। (روحُ البیان ج۳ص۱۹۷) **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जब मर्द मर्द से ह़राम कारी करे तो वोह दोनों ज़ानी हैं और जब औ़रत औ़रत से ह़राम कारी करे तो वोह दोनों ज़ानिया हैं।

(السّنَنُ الکبری ج ٨ص٤٠٦ حدیث١٧٠٣٣)

तीन त़रह़ के अम्रद परस्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आख़िरी ज़माने में कुछ लोग "**लूत़िय्या**" कहलाएंगे और येह तीन[3] त़रह़ के होंगे ﴿1﴾ वोह कि जो (शह़वत के साथ) सिर्फ़ **अम्रदों** की सूरतें देखेंगे और (बा वुजूदे शह़वत) उन से बातचीत करेंगे ﴿2﴾ जो (शह़वत के साथ) उन से हाथ मिलाएंगे और गले भी मिलेंगे ﴿3﴾ जो उन के साथ बद फ़े'ली करेंगे। इन सभों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है मगर वोह जो तौबा कर लेंगे। (तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा और वोह ला'नत से बचे रहेंगे)

(اَلْفِرْدَوس بمأثور الْخطّاب ج۲ ص۳۱۵ حدیث ۳٤۲۵)

www.dawateislami.net

सुलगती लाशें

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक बार जंगल में देखा कि एक "मर्द" पर आग जल रही है। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पानी ले कर आग बुझानी चाही तो आग ने **अम्रद** की सूरत इख़्तियार कर ली। **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दोनों को अपनी अस्ली ह़ालत पर लौटा दे, ताकि मैं इन से इन का गुनाह पूछूं। चुनान्चे मर्द और **अम्रद** आग से बाहर आ गए। मर्द कहने लगा : **या रूहल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! मैं ने इस **अम्रद** से दोस्ती की थी, अफ़्सोस ! शह़वत से मग़्लूब हो कर मैं ने शबे जुमुआ़ इस से बद फ़े'ली की, दूसरे दिन भी काला मुंह किया। एक नासेह़ (या'नी नसीह़त करने वाले) ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

का ख़ौफ़ दिलाया मगर मैं न माना। फिर हम दोनों मर गए। अब बारी बारी आग बन कर एक दूसरे को जलाते हैं और हमारा येह अ़ज़ाब क़ियामत तक है। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की पनाह)

(نُزْهَةُ المجالس ج۲ ص ۵۲)

अम्रद भी जहन्नम का ह़क़दार !

अम्रदों से दोस्तियां करने वाले शैत़ान के वार से ख़बरदार ! बेशक **इब्तिदाअन** निय्यत साफ़ ही सही, मगर शैत़ान को बहकाते देर नहीं लगती, **अम्रद** से दोस्ती करने वाले का कुछ नहीं तो बद निगाही और शह्वत के साथ बदन टकराने के गुनाह से बचना तो निहायत ही दुश्वार होता है। येह भी याद रहे ! अगर **अम्रद** रिज़ा मन्दी से या पैसों या नोकरी वग़ैरा के लालच में बद फ़े'ली करवाएगा तो वोह भी गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार है।

क़ौमे लूत़ के क़ब्रिस्तान में

ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "जो शख़्स क़ौमे लूत़ का सा अ़मल (या'नी बद फ़े'ली) करता होगा और बिग़ैर तौबा मरेगा, तो तदफ़ीन के बा'द उसे क़ौमे लूत़ के क़ब्रिस्तान में मुन्तक़िल कर दिया जाएगा और उस का ह़श्र क़ौमे लूत़ के साथ होगा।" (या'नी क़ौमे लूत़ के साथ क़ियामत में उठेगा)

(اِبنِ عَساکِر ج۴۵ص۴۰۶)

इ़ग़्लाम बाज़ की दुन्या में सज़ा

ह़-नफ़ी मज़हब में इ़ग़्लाम बाज़ (या'नी बद फ़े'ली करने वाले) की सज़ा येह है कि उस के ऊपर दीवार गिरा दें या ऊंची

जगह से उस को औंधा कर के गिराएं और उस पर पथ्थर बरसाएं या उसे क़ैद में रखें यहां तक के मर जाए या तौबा कर ले । या चन्द बार येह फ़े'ले बद किया हो तो बादशाहे इस्लाम उसे क़त्ल कर डाले । (دُرِّمُختارو رَدُّالمُحتار ج ٦ ص٤٣، ٤٤) अ़वाम के लिये इजाज़त नहीं कि बयान कर्दा सज़ाएं दें, सिर्फ़ ह़ाकिमे इस्लाम देगा ।

बद फ़े'ली को जाइज़ समझना कैसा ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा 397 ता 398 से दो सुवाल जवाब मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

सुवाल: जो बद फ़े'ली को जाइज़ समझे या जाइज़ कहे क्या वोह मुसल्मान ही रहेगा ?

जवाब: नहीं, वोह **काफ़िर** हो जाएगा । **फ़ु-क़ह़ाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं : जिस ने **ह़रामे इज्माई** की ह़ुरमत का इन्कार किया या उस के ह़राम होने में शक किया वोह काफ़िर है जैसे शराब (ख़म्र), ज़िना, **लिवात़त**, सूद वग़ैरहा । (مِنَحُ الرَّوض ص ٥٠٣)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن, **लिवात़त** के ह़लाल होने के क़ाइल के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं : ह़िल्ले लिवात़त का क़ाइल काफ़िर है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 694)

"काश ! बद फ़े'ली जाइज़ होती" कहना कुफ़्र है

सुवाल: उस शख़्स के लिये क्या ह़ुक्म है जो जाइज़ तो न कहे मगर येह

तमन्ना करे कि **काश ! बद फ़े'ली जाइज़ होती ।**

जवाब: येह तमन्ना भी **कुफ़्र** है । **अल बहूरुर्राइक़** जिल्द 5 **सफ़ह़ा** 208 पर है : जो ह़राम काम कभी ह़लाल न हुए उन के बारे में ह़लाल होने की तमन्ना करना **कुफ़्र** है म-सलन तमन्ना करना कि काश ! ज़ुल्म, ज़िना और क़त्ले नाह़क़ **ह़लाल** होते ।

पेश इमाम की करामत

ऐ अल्लाह की रह़मत से जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस के त़लबगारो ! बद फ़े'ली से बचने के लिये निगाहों की ह़िफ़ाज़त भी ज़रूरी है कि येह इस ख़ौफ़नाक गुनाह की पहली सीढ़ी है, बद निगाही की तबाह कारी की एक झलक सुना-ह़ज़ा हो, चुनान्चे **ह़ाफ़िज़** अबू अम्र मद्रसे में कुरआने पाक पढ़ाते थे, एक बार एक ख़ूब सूरत लड़का पढ़ने के लिये आ गया, उस की त़रफ़ गन्दी लज़्ज़त के साथ देखते ही उन को सारा कुरआन शरीफ़ भुला दिया गया, ख़ूब तौबा की और रोते हुए मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर रूदाद अ़र्ज़ कर के त़ालिबे दुआ़ हुए । फ़रमाया : इसी साल **ह़ज** की सआ़दत ह़ासिल करो और **मिना** शरीफ़ की **मस्जिदुल ख़ैफ़** शरीफ़ में जा कर वहां **पेश इमाम** से दुआ़ करवाओ । चुनान्चे (साबिक़ा) ह़ाफ़िज़ साह़िब ने ह़ज किया और **मस्जिदुल ख़ैफ़** शरीफ़ में ज़ोहर से पहले ह़ाज़िर हो गए, एक नूरानी चेहरे वाले बूढ़े पेश इमाम साह़िब लोगों के झुरमट के अन्दर मेह़राब में तशरीफ़ फ़रमा थे । कुछ देर के बा'द एक साह़िब तशरीफ़ लाए,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

ब शुमूल इमाम साहि़ब सब ने खड़े हो कर उन का इस्तिक़्बाल किया, नौ वारिद (नए आने वाले साहि़ब) भी उसी **ह़ल्क़े** में बैठ गए । अज़ान हुई और नमाज़े ज़ोहर के बा'द लोग **मुन्तशिर** हो गए। पेश इमाम साहि़ब को तन्हा पा कर (साबिक़ा) ह़ाफ़िज़ साहि़ब आगे बढ़े और सलाम व दस्त बोसी के बा'द रोते हुए मुद्दआ़ अ़र्ज़ कर के दुआ़ की इल्तिजा की, **पेश इमाम साहि़ब के दुआ़ करते ही सारा क़ुरआने मजीद फिर ह़िफ़्ज़ हो गया,** इमाम साहि़ब ने पूछा : तुम्हें मेरा पता किस ने बताया ? अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने । फ़रमाने लगे : अच्छा उन्हों ने मेरा पर्दा फ़ाश किया है, अब मैं भी उन का राज़ खोलता हूं, सुनो ! ज़ोहर से पहले जिन साहि़ब की आमद पर उठ कर सब ने ता'ज़ीम की थी वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی थे ! वोह अपनी **करामत** से बसरा शरीफ़ से यहां मिना शरीफ़ की **मस्जिदुल ख़ैफ़** में तशरीफ़ ला कर रोज़ाना नमाज़े ज़ोहर अदा फ़रमाते हैं । (ماخوذاً تذکرة الاولیاء ج۱ ص ٤٠) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आख़िरी उ़म्र है क्या रौनक़े दुन्या देखूं
अब तो बस एक ही धुन है कि मदीना देखूं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ाफ़िज़े की तबाही का एक सबब

ऐ दीदारे मदीना के आरज़ू मन्द आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! **अम्रद** की त़रफ़ "गन्दी लज़्ज़त" के साथ देखने से **ह़ाफ़िज़ा** भी तबाह

हो सकता है । आज कल याद दाश्त की कमी की शिकायत आ़म है, हुफ़्फ़ाज़ की भी एक ता'दाद ह़ाफ़िज़े की कमज़ोरी की आफ़त में मुब्तला है और बहुत सों को तो क़ुरआने पाक ही भुला दिया जाता है (क़ुरआन शरीफ़ या फ़ुलां आयत "भूल" गया कहने के बजाए "भुला दिया गया" कहना मुनासिब है) बद निगाही और **T.V.** वग़ैरा पर फ़िल्में डिरामे देखना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और इस से **ह़ाफ़िज़ा** भी कमज़ोर हो जाता है । ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर होने के और भी कई अस्बाब हैं लिहाज़ा ख़बरदार ! किसी ह़ाफ़िज़ साह़िब की मन्ज़िल कमज़ोर होने की सूरत में महज़ अपनी अटकल से येह ज़ेह्न बना लेना कि बद निगाही के सबब ऐसा हुवा है, **बद गुमानी** है और मुसल्मान पर बद गुमानी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

दो अम्रद पसन्द मुअ़ज़्ज़िनों की बरबादी

ऐ ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने वाले मदीने के दीवानो ! बद फ़े'ली की नौबत न भी आए तब भी बद निगाही से नीज़ **अम्रद** के साथ दिल चस्पी रखने और दोस्ती करने से **ईमान बरबाद** हो जाने का भी अन्देशा है । एक दिल हिला देने वाली **ह़िकायत** पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़िये : चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद **मुअ़ज़्ज़िन** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तक्रार कर रहा था : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुख़्सत करना ।" मैं ने उस से पूछा : इस के इलावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे

दो[2] भाई थे, बड़ा भाई **चालीस[40] साल** तक मस्जिद में बिला मुआ़वज़ा अज़ान देता रहा, जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने **कुरआने पाक** मांगा, हम ने उसे दिया ताकि इस से ब-र-कतें ह़ासिल करे, मगर **कुरआन शरीफ़** हाथ में ले कर वोह कहने लगा : ''तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं कुरआन के तमाम ए'तिक़ादात व अह़कामात से बेज़ार हूं और **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) मज़हब इख़्तियार करता हूं।'' फिर वोह मर गया। इस के बा'द **दूसरे भाई** ने **तीस[30] बरस** तक मस्जिद में **फ़ी सबीलिल्लाह** अज़ान दी। मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) होने का ए'तिराफ़ किया और मर गया। लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेह़द फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त **ख़ातिमा बिलख़ैर** की दुआ़ मांगता रहता हूं। **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि तुम्हारे **दोनों[2] भाई** आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : **''वोह ग़ैर औ़रतों में दिल चस्पी लेते थे और अम्रदों** (या'नी बे रीश लड़कों) **को** (शह्वत से) **देखते थे।''**

(الرَّوضُ الفائق ص١٧)

अ़त्तार है ईमां की ह़िफ़ाज़त का सुवाली
ख़ाली नहीं जाएगा येह दरबारे नबी से

(वसाइले बख़्शिश, स. 203)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चेहरे का गोश्त झड़ गया

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बा'दे इन्तिक़ाल ख़्वाब में देख कर

किसी ने पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला किया ? कहने लगे : मुझे बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में पेश किया गया और मेरे गुनाह गिनवाने शुरूअ़ किये गए, मैं इक़रार करता गया और वोह मुआ़फ़ होते गए, मगर एक गुनाह पर शर्म के मारे मैं चुप हो गया और देखते ही देखते मेरे चेहरे की खाल और गोश्त सब कुछ झड़ गया। ख़्वाब देखने वाले ने पूछा : आख़िर वोह गुनाह कौन सा था ? फ़रमाया : **''अफ़्सोस ! एक बार मैं ने एक अम्रद (या'नी बे रीश लड़के) पर शह्वत भरी नज़र डाल दी थी।''** (کیمیائے سعادت ج ۲ ص۱۰۰۶)

शह्वत से लिबास देखना भी ह़राम

ऐ ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा रखने वाले इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! कि जब **अम्रद** को शह्वत के साथ देखने का इस क़दर ख़ौफ़नाक अन्जाम है ! तो न जाने बद फ़े'ली का अ़ज़ाब किस क़दर शदीद होगा। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त** (जिल्द 3)'' **सफ़ह़ा** 442 पर है : लड़का जब मुराहिक़ (या'नी बालिग़ होने के क़रीब) हो जाए और वोह ख़ूब सूरत न हो तो नज़र के बारे में इस का वोही हुक्म है जो मर्द का है और ख़ूब सूरत हो तो **औ़रत** का जो हुक्म है वोह इस के लिये है या'नी शह्वत के साथ इस की त़रफ़ नज़र करना ह़राम है और शह्वत न हो तो उस की त़रफ़ नज़र भी कर सकता है और उस के साथ तन्हाई भी जाइज़ है। शह्वत न होने का मत़लब येह है कि इसे यक़ीन हो कि नज़र करने से शह्वत न होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे, बोसा

(लेने) की ख़्वाहिश पैदा होना भी शह्वत की ह़द में दाख़िल है। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۰۲) याद रहे ! **अम्रद** के फ़क़त़ चेहरे ही को शह्वत के साथ देखना गुनाह नहीं, निगाहें नीची होने के बा वुजूद **अम्रद** के सीने या हाथ या पाउं वग़ैरा बल्कि सिर्फ़ लिबास ही पर नज़र पड़ रही हो और ''गन्दी लज़्ज़त'' आ रही हो तो उन आ'ज़ा या लिबास को देखना भी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अगर किसी लड़के की त़रफ़ बार बार देखने को जी चाह रहा हो और गन्दी लज़्ज़त के बाइस वहां से हटने का दिल न करता हो, अगर ऐसा है तो वहां से फ़ौरन हट जाए। अगर مَعَاذَاللّٰه शह्वत के बा वुजूद उस को देखा या वहां रहा तो गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार है।

ख़ौफ़नाक सांप की ज़र्ब

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देखा गया कि उन का **आधा चेहरा सियाह** है। वजह पूछने पर बताया कि जन्नत में जाते हुए जहन्नम पर से जूंही गुज़रा, **एक ख़ौफ़नाक सांप** बरआमद हुवा और उस ने मेरे चेहरे पर एक ज़ोरदार ज़र्ब लगाते हुए कहा : **तूने फ़ुलां दिन एक अम्रद को शह्वत के साथ देखा था येह उस बद निगाही की सज़ा है अगर तू ज़ियादा देखता तो मैं ज़ियादा सज़ा देता।** (تذکرۃ الاولیاء حصہ اوّل ص۶۴)

शह्वत परस्ती के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

ऐ बरोज़े क़ियामत मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुस्कराती नूर बरसाती ह़सीन सूरत देखने के आरज़ू मन्द आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ौर तो कीजिये ! जब **ब नज़रे शह्वत देखने**

का अन्जाम इस क़दर होलनाक है तो फिर शह्वत के साथ **अम्रद** की मुस्कराहट से लुत़्फ़ अन्दोज़ होना, बल्कि ख़ुद उस के सामने "गन्दी लज़्ज़त" के साथ इस लिये मुस्कराना ताकि वोह भी मुस्कराए येह किस क़दर तबाह कुन होगा ! नीज़ **अम्रद** के साथ मज़ीद येह काम भी शह्वत के साथ करना ह़राम हैं : इस से दोस्ती और हंसी मज़ाक़ करना, इस को छेड़ कर, ग़ुस्सा दिला कर इस के इज़्तिराब (या'नी बेचैनी) से "गन्दा मज़ा" ह़ासिल करना, इस को आगे या पीछे स्कूटर पर सुवार करना, उस से लिपटना, उस से हाथ मिलाना, गले मिलना, इस से अपना जिस्म टकराना, उस से अपना सर पाउं या कमर वग़ैरा दबवाना, मरज़ वग़ैरा में उठते बैठते या चलते हुए उस के हाथ का सहारा लेना, उस को तीमार दारी के लिये रखना, उस को अपने यहां मुलाज़िम रखना, मज़ाक़ में उस को दबोच कर गिराना, उस का हाथ पकड़ कर या उस के कन्धे पर हाथ रख कर चलना, इज्तिमाअ़ वग़ैरा में उस के क़रीब बैठना, उस के पास बैठ कर उस की रान पर अपना घुटना रखना या उस का घुटना अपनी रान पर रहने देना, مَعَاذَاللّٰه मस्जिद के अन्दर नमाज़े बा जमाअ़त में उस से कन्धा चिपका कर खड़ा होना, वग़ैरा वग़ैरा । **मस्अला :** जमाअ़त में इस त़रह़ मिल कर खड़ा होना वाजिब है कि कन्धे से कन्धा छिल रहा हो या'नी एक का कन्धा दूसरे के कन्धे से ख़ूब मिला हुवा हो अलबत्ता बराबर में **अम्रद** खड़ा हो और कन्धा मिला कर खड़े होने से शह्वत आती हो तो वहां से हट जाए, वरना गुनहगार होगा ।

बोसा लेने का अ़ज़ाब

मन्क़ूल है : "जो किसी लड़के का (शह्वत के साथ) बोसा लेगा वोह

पांच सो साल जहन्नम की आग में जलाया जाएगा ।'' (مُكاشَفةُ الْقُلوب ص٧٦)

ऐ अ़ज़ाबे नार की सहार न रखने वाले ज़ारो नज़ार बन्दो ! अगर कभी ''**अम्रद**'' के तअ़ल्लुक़ से बद निगाही या बोसा बाज़ी वग़ैरा किसी त़रह़ का भी गुनाह कर बैठे हैं तो ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठिये और घबरा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ कर लीजिये, सच्ची पक्की तौबा कर के इस त़रह़ के बल्कि हर त़रह़ के गुनाहों से आयन्दा बचने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये । ख़बरदार ! **अम्रद** की दोस्ती से बाज़ रहने की तल्क़ीन करने वाले ख़ैर ख़्वाह पर नाराज़ मत हों, शैत़ान के उक्साने पर, ताव में आ कर, बल खा कर, नासेह़ (या'नी नसीह़त करने वाले) को दलाइल में उलझा कर, उस पर अपनी पारसाई का सिक्का जमा कर हो सकता है कि चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में आप रुस्वाई से बच भी जाएं, मगर याद रखिये ! रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ दिलों के अह़वाल से बा ख़बर है ।

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह
वोह ख़बरदार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

बद निगाही से शक्ल बिगड़ सकती है

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम या तो अपनी निगाहें नीची रखोगे और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करोगे या फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी शक्लें बिगाड़ देगा ।'' (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانى ج٨ ص٢٠٨ حديث٧٨٤٠)

क़ब्र में कीड़े सब से पहले तेरी आंख खाएंगे

औरतों और अम्रदों वग़ैरा से बद निगाही करने वालो ख़बरदार !

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 54 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''नसीह़तों के म-दनी फूल'' सफ़ह़ा** 44 पर है : (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है ऐ इब्ने आदम !) मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों की त़रफ़ मत देख (**क़ब्र** में) कीड़े सब से पहले तेरी आंख खाएंगे। याद रख ! ह़राम पर नज़र और उस की **मह़ब्बत** पर तेरा मुह़ा-सबा (या'नी पूछगछ) किया जाएगा। और कल बरोज़े क़ियामत मेरे हुज़ूर खड़े होने को याद रख ! क्यूं कि मैं लम्ह़ा भर के लिये भी तेरे राज़ों से ग़ाफ़िल नहीं होता, बेशक मैं दिलों की बात जानता हूं।

नज़र की ह़िफ़ाज़त करने वाले के लिये जहन्नम से अमान है

जो अम्रदों और ग़ैर औ़रतों वग़ैरा की मौजू-दगी में आंखें झुकाता, अपनी गन्दी ख़्वाहिश दबाता और उन को देखने से ख़ुद को बचाता है वोह क़ाबिले सद मुबारक बाद है चुनान्चे ''नसीह़तों के म-दनी फूल'' **सफ़ह़ा** 30 पर है : (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है) जिस ने मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से अपनी आंखों को झुका लिया (या'नी उन्हें देखने से बचा) मैं उसे **जहन्नम से अमान** (पनाह) **अ़त़ा कर दूंगा।**

इब्लीस का ज़हरीला तीर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़लावत निशान है कि ह़दीसे क़ुदसी (या'नी फ़रमाने ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ) है : **नज़र** इब्लीस के तीरों में से एक ज़ह़र में बुझा हुवा तीर है पस जो शख़्स मेरे ख़ौफ़ से इसे तर्क कर दे तो मैं उसे ऐसा **ईमान** अ़त़ा करूंगा जिस की ह़लावत (या'नी मिठास)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

वोह अपने दिल में पाएगा। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِي ج ١٠ ص ١٧٣ حديث ١٠٣٦٢)

अम्रद के साथ तन्हाई सात दरिन्दों से भी ज़ियादा ख़त़रनाक

एक ताबेई बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं नौ जवान सालिक (या'नी इबादत गुज़ार नौ जवान) के साथ बे रीश लड़के के बैठने को **सात दरिन्दों** से ज़ियादा ख़त़रनाक समझता हूं।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "कोई शख़्स एक मकान में किसी **अम्रद** के साथ तन्हा रात न गुज़ारे।" इमाम इब्ने **ह़जर** मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने **अम्रद** को औ़रत पर क़ियास करते हुए घर, दुकान या ह़म्माम में इस के साथ ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) को ह़राम क़रार दिया क्यूं कि **शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "जो शख़्स किसी औ़रत (अज्नबिय्या) के साथ तन्हा होता है तो वहां तीसरा शैत़ान होता है।"

(تِرْمِذِی ج ٤ ص ٦٧ حديث ٢١٧٢)

अम्रद औ़रत से भी ज़ियादा ख़त़रनाक है !

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने **ह़जर** मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : जो **अम्रद** औ़रतों से ज़ियादा ख़ूब सूरत होता है उस में फ़ितना भी ज़ियादा होता है, इस लिये कि उस से औ़रतों की निस्बत बुराई का ज़ियादा इम्कान होता है लिहाज़ा उस के साथ तन्हाई इख़्तियार करना ब द-र-जए औला ह़राम है। (مُلَخَّص ازاَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكبائِر ج ٢ ص ١٠)

अह़नाफ़ के नज़्दीक शह्वत न हो तो **अम्रद** के साथ तन्हाई ह़राम नहीं। ताहम बा'ज़ शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक **अम्रद** के साथ

तन्हाई का मुत़्लक़न ह़राम होना हमें एह़तियात़ का दर्स देता है ।

अम्रद के साथ 17 शयात़ीन

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى एक ह़म्माम में दाख़िल हुए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास **अम्रद** या'नी एक बे रीश लड़का आया तो इर्शाद फ़रमाया : इसे मुझ से दूर कर दो क्यूं कि मैं हर औ़रत के साथ एक शैत़ान जब कि हर **अम्रद के साथ 17 शयात़ीन** देखता हूं । (ایضاً)

अम्रद "आग" है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु ग़फ़्फ़ार हमें अ़ज़ाबे नार से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और **अम्रद** के गुनाहों भरे कुर्ब से उ़म्र भर बचाए रखे । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم बस पक्का ज़ेह्न बना लीजिये कि बद निगाही की आफ़त और **अम्रद** की नज़्दीकी की मुसीबत से हर ह़ाल में اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी ह़िफ़ाज़त करेंगे । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" **सफ़ह़ा** 239 पर है : **ख़बरदार ! अम्रद तो आग है आग ! अम्रद का कुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचा तानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है । अम्रद** से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है अगर्चे उस बेचारे का कोई क़ुसूर नहीं, **अम्रद** होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये, मगर उस से अपने आप

www.dawateislami.net

को बचाना बेह़द ज़रूरी है। हरगिज़ **अम्रद** को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, ख़ुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की **तपिश** हर सूरत में पहुंचेगी । शह्वत न हो जब भी **अम्रद** से गले मिलना मह़ल्ले फ़ितना (या'नी फ़ितने की जगह) है, और शह्वत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना (ह़राम) बल्कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **अम्रद की त़रफ़ शह्वत के साथ देखना भी ह़राम है ।** (دُرِّمُختار ج ۲ ص۹۸،تفسیراتِ احمدیه ص۵۵۹) उस के बदन के हर हिस्से ह़त्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये । इस के तसव्वुर से अगर शह्वत आती हो तो इस से भी बचिये, उस की तह़रीर या किसी चीज़ से शह्वत भड़क्ती हो तो उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की ह़िफ़ाज़त कीजिये, ह़त्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये । अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर क़ाइम होता है और शह्वत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये ।

अम्रद के साथ 70 शैत़ान

अम्रद के ज़रीए किये जाने वाले शैत़ाने अय्यार व मक्कार के तबाह कार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : **औरत के साथ दो[2] शैत़ान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर ।** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 721)

अम्रद भान्जे को साथ ले कर न निकलो !

एक शख़्स करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में

ह़ाज़िर हुवा । उस के साथ एक ख़ूब सूरत लड़का था । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारे साथ येह कौन है ? अ़र्ज़ की : "येह मेरा भान्जा है ।" फ़रमाया : आयन्दा इसे ले कर मेरे पास न आना और इसे साथ ले कर रास्ते में न निकला करो ताकि इसे और तुम्हें न जानने वाले बद गुमानी न करें ।

(اَلزَّواجِر ج۲ص۱۲)

परहेज़ गार भी फंस जाते हैं

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से एक बार शैत़ान ने कहा : दुन्या के माल की **मह़ब्बत** से तो बचने में आप जैसे लोग काम्याब हो जाते हैं, मगर मेरे पास **अम्रद** की कशिश का जाल ऐसा है कि इस में बड़े बड़े परहेज़ गारों को फंसा लेता हूं ।

www.dawateislami.net

अम्रद के फ़ितने से बचो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अम्रद या'नी बे रीश लड़का मर्द के लिये उ़मूमन पुर कशिश होता है, इस में बज़ाते ख़ुद **अम्रद** बे क़ुसूर है और इस ह़वाले से इस की दिल आज़ारी गुनाह है, बस मर्द को चाहिये कि वोह इस से मोह़तात़ रहे । बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللہُ الْمُبِیْن ने अम्रद से दूर रहने की सख़्त ताकीद फ़रमाई है । जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" (जिल्द 2) **सफ़ह़ा** 31 ता 32 पर है : इसी लिये सालिह़ीन رَحِمَہُمُ اللہُ الْمُبِیْن ने **अम्रदों** (या'नी बे रीश लड़कों) को (बिला शह्वत भी) देखने, इन से ख़ल्त़ मल्त़ (या'नी गुडमुड) होने और (शह्वत न आती हो तब भी)

इन के साथ बैठने से बचने के **मु-तअ़ल्लिक़** मुबा-लग़ा फ़रमाया। (या'नी बचने की बहुत ज़ियादा ताकीद फ़रमाई)

शह्वत की पहचान

लड़का देख कर चिपटा लेने या बोसा लेने को जी चाहना, येह शह्वत की अ़लामतें हैं। हां बहुत छोटे बच्चे को बिग़ैर शह्वत के बोसा लेने में ह़रज नहीं।

"या रब ! मेरी तौबा" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी भाइयों के लिये शह्वत से बचने के 12 म-दनी फूल

﴾1﴿ दाढ़ी वाला हो या बे रीश बल्कि जानवर को देख कर भी शह्वत आती हो तो उस की त़रफ़ देखना ह़राम है ﴾2﴿ मवेशियों, जानवरों और परिन्दों की शर्मगाहों और उन की **जुफ़्तियों** या'नी "मिलापों" बल्कि मख्खियों और कीड़े मकोड़ों के "मिलन" के मनाज़िर भी गन्दी लज़्ज़तों के साथ देखना ना जाइज़ व गुनाह है, ऐसे मवाक़ेअ़ पर फ़ौरन नज़र हटा ले बल्कि जूं ही इस के "आसार" मह़सूस हों फ़ौरन वहां से हट जाए। ﴾3﴿ जो लोग मवेशी या परिन्दे और मुर्ग़ियां बेचते या पालते हैं उन को इस ह़वाले से बहुत मोह़तात़ रहने की ज़रूरत है ﴾4﴿ अगर शह्वत आती हो तो नमाज़ में भी सफ़ के अन्दर **अम्रद** के बराबर न खड़े हों ﴾5﴿ दर्स व इज्तिमाअ़ वग़ैरा में भी **अम्रद** के क़रीब न बैठिये ﴾6﴿ इज्तिमाअ़ या नमाज़ की सफ़ में **अम्रद** क़रीब आ जाए और अभी आप ने नमाज़ न शुरूअ़ की हो और अन्देशए शह्वत हो तो उस को न हटाइये, आप ख़ुद वहां से

हट जाइये ﴾7﴿ **अम्रद** को देखने से जिसे शह्वत आती हो उसे **अम्रद** से नज़र की ह़िफ़ाज़त वाजिब है और ऐसी जगह से भी बचना चाहिये जहां **अम्रद** होते हों ﴾8﴿ साइकिल पर आगे या पीछे किसी ग़ैर **अम्रद** को भी इस त़रह़ बिठाना कि उस की रान वग़ैरा से घुटना टकराए मुनासिब नहीं ﴾9﴿ शह्वत के बा वुजूद दूसरे को आगे या पीछे स्कूटर या साइकिल पर बिठाना **ह़राम** है ﴾10﴿ एह़तियात़ इसी में है कि डबल सुवारी के दौरान मोटी चादर वग़ैरा इस त़रह़ बीच में ह़ाइल कर दी जाए कि दोनों[2] के जिस्म का हर ह़िस्सा एक दूसरे से इस त़रह़ जुदा रहे कि एक के बदन की गरमी दूसरे को न पहुंचे, इस के बा वुजूद अगर किसी को शह्वत आए तो फ़ौरन स्कूटर रोक कर जुदा हो जाए वरना गुनहगार होगा ﴾11﴿ स्कूटर पर तीन सुवारियों का चिपक कर बैठना सख़्त ना पसन्दीदा फ़े'ल है नीज़ ह़ादिसे का ख़त़रा होने की वजह से पाकिस्तान में क़ानूनन भी जुर्म है ﴾12﴿ ऐसी भीड़ या क़ित़ार में क़स्दन शामिल होने से बचें जिस में आदमी एक दूसरे के पीछे चिपक्ते हैं और अगर शह्वत आती हो तो ह़राम है । याद रखिये ! अपने आप को जो शैत़ान से मह़फ़ूज़ समझे, बस समझो उस पर शैत़ान काम्याब हो चुका ।

भीड़ में किसी को भी घुसना नहीं चाहिये !

हुजूम या क़ित़ार वग़ैरा में जब पीछे से धक्के लग रहे हों तो **अम्रद** को फ़ौरन उधर से निकल जाना मुनासिब है बल्कि जहां चिपका चिपकी और धक्का धक्की हो रही हो वहां **अम्रद** को घुसना ही नहीं चाहिये कि कहीं उस की वजह से कोई शख़्स ''गुनहगार'' न हो जाए । जब भी कोई चीज़ तक़्सीम की जा रही

हो या किसी को देखने या उस से मिलने के लिये हुजूम हो ऐसे मवाक़ेअ़ पर धक्कम पील से अम्रद और ग़ैरे अम्रद सभी को बचना चाहिये । हर एक जानता है कि **का'बतुल्लाह** के अन्दर दाख़िल होना बहुत बड़ी सआ़दत है मगर ऐसे मौक़अ़ पर भी भीड़भाड़ में घुसने से बचने की ताकीद करते हुए सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **''ज़बर दस्त** (या'नी त़ाक़त वर) **मर्द** (का'बा शरीफ़ में दाख़िल होते वक़्त दबने कुचलने से) **आप बच भी गया तो औरों को धक्के दे कर ईज़ा देगा और येह जाइज़ नहीं ।''** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1150) त़वाफ़ में **ह़-जरे अस्वद** को चूमना सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित है मगर इस के लिये हुजूम में घुसने की मुमा-न-अ़त करते हुए आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि : इस के लिये **''न औरों को ईज़ा दो न आप दबो कुचलो''** बल्कि..... हाथों से उस की त़रफ़ इशारा कर के उन्हें बोसा दे लो । اِلخ (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 739) बहर ह़ाल हुजूम में घुसने से बचना चाहिये कि कहीं हमारी वजह से किसी को ईज़ा न पहुंच जाए। मैं ने कई समझदार इस्लामी भाइयों को देखा है कि भीड़ के मौक़अ़ पर दूर खड़े रहते हैं, हर एक को ऐसा ही करना चाहिये । अगर कभी हुजूम में घिर भी जाएं तो इस से पहले कि धक्कम पील शुरूअ़ हो बाहर निकलने की तरकीब करनी चाहिये मगर निकलते हुए भी किसी को ईज़ा न हो इस का ख़याल रखा जाए ।

इमामे आ'ज़म का अम्रद के बारे में त़र्ज़े अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الصَّمَد जब बारगाहे सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ में पढ़ने के लिये ह़ाज़िर हुए तो बे रीश और **अम्रदे** ह़सीन थे, सय्यिदुना इमामे आ'ज़म

अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन को हुक्म दिया कि पहले क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर लीजिये, वोह एक हफ़्ते के बा'द फिर इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर हो गए, फ़रमाया : मैं ने कहा था ह़िफ़्ज़ कर लीजिये लेकिन आप फिर आ गए ! अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! ता'मीले इर्शाद में ह़िफ़्ज़ कर के ही ह़ाज़िर हुवा हूं। एक हफ़्ते में क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर लेने का सुन कर इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم उन की ज़िहानत और क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा से बेह़द **मु-तअस्सिर** हुए मगर उन की कशिश में कमी लाने की ग़रज़ से उन के वालिदे माजिद से फ़रमाया : इन का सर मुंडवा दीजिये और इन्हें पुराने कपड़े पहनाइये, वोह सर मुंडवा कर ह़ाज़िर हुए तब भी ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइस सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन को अपने सामने नहीं बल्कि अपनी पीठ या सुतून के पीछे बिठा कर पढ़ाते ताकि उन पर नज़र न पड़े । (مُلْتَقَطًا مِنَ الْمَنَاقِب لِلْكَرْدَرِى ج٢ ص١٤٧، ١٥٥، رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٦٠٣، شذارت الذهب لابن العماد ج٢ص ١٧)

आंखों में सरे ह़श्र न भर जाए कहीं आग
आंखों पे मेरे भाई लगा क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 116)

अम्रद की पहचान

इस ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत से मुदर्रिसीन के साथ साथ **अम्रदों** को भी दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये । **अम्रद** को आ़म तौ़र पर अपने **अम्रद** होने का एह़सास नहीं होता । जिन की दाढ़ी निकल कर जब तक पूरे चेहरे पर ख़ूब नुमायां और घनी नहीं हो जाती वोह उ़मूमन **अम्रद** होते हैं, बा'ज़ 22 साल तक **अम्रद** रहते हैं और बा'ज़ों के पूरे चेहरे पर घनी

दाढ़ी नहीं आती तो वोह **25** साल या इस से भी ज़ाइद उ़म्र तक **अम्रद** रहते हैं । **अम्रद** के इ़लावा भी अगर किसी मर्द म-सलन **अम्रद** के बड़े भाई या बाप बल्कि दादा को देख कर शह्वत आती हो और "गन्दी लज़्ज़त" के साथ बार बार उस की त़रफ़ नज़र उठती हो तो अब वोह देखा जाने वाला मर्द चाहे बुढ्ढा हो उसे शह्वत के साथ देखना **ह़राम** है ।

देखना है तो मदीना देखिये
क़स्रे शाही का नज़ारा कुछ नहीं

अम्रद को तोह़फ़ा देना कैसा ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़ह़ा** 330 से एक मुफ़ीद सुवाल जवाब मुला-ह़ज़ा हो :

सुवाल: **मर्द** का शह्वत की वजह से **अम्रद** से दोस्ती रखना और उस को मज़ीद हिलाने के लिये तोह़फ़ा व दा'वत का सिल्सिला रखना कैसा है ?

जवाब: ऐसी दोस्ती ना जाइज़ व ह़राम है बल्कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं : **"अम्रद की त़रफ़ शह्वत से देखना भी ह़राम है ।"** (دُرِّمُختار ج ۲ ص۹۸، تفسیراتِ احمدیه ص۵۵۹) और शह्वत की वजह से **अम्रद** को तोह़फ़ा देना या उस की दा'वत करना भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

"मोह़तात़ बन्दा सुखी रहता है" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से अम्रद के लिये एह़तियात़ के 19 म-दनी फूल

(पेश कर्दा एह़तियात़ों की वजह से बिला मस्लह़ते शर-ई वालिदैन या घर वालों की नाराज़ी मोल न लें)

❁ लड़के के लिये आ़फ़िय्यत इसी में है कि अपने से बड़ी उ़म्र वाले से दूर रहे । बहुत नाज़ुक दौर है مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ आज कल बा'ज़ अवक़ात "बाप बेटी" नीज़ छोटे और बड़े सगे भाइयों के "आपसी गन्दे मुआ़-मलात" की लरज़ा ख़ैज़ ख़बरें भी सुनी जाती हैं ❁ यक़ीनन हर बड़ा फ़र्द छोटे फ़र्द के ह़क़ में "बुरा" नहीं होता, ताहम आप किसी "बड़े" से दोस्ती गांठ कर उस को और ख़ुद को बरबादी के ख़त़रे में मत डालिये ❁ बालिग़ **अम्रद** भी आपस में बे तकल्लुफ़ हो कर एक दूसरे को दबोचने, उठाने, पटख़्ने, गले में हाथ डाल कर चिपटाने वग़ैरा ह़-र-कतें कर के शैत़ान का खिलोना न बनें । शह्वत के साथ **अम्रद** का भी इस त़रह़ की ह़-र-कतें करना **ह़राम** है ❁ बिला मस्लह़ते शर-ई अपने से बड़ों के साथ "बहुत ज़ियादा मिलन-सारी" का मुज़ा-हरा न फ़रमाएं, वरना "आज़्माइश" में पड़ सकते हैं ❁ अगर किसी "बड़े" को ख़्वाह वोह उस्ताज़ ही क्यूं न हो अपने अन्दर ग़ैर ज़रूरी दिल चस्पी लेता, बार बार तोह़फ़े देता, बे जा ता'रीफ़ें करता और इसी ज़िम्न में आप को "छोटा भाई" कहता पाएं तो ख़ूब मोह़तात़ हो जाइये ❁ **अम्रद** को (या'नी 22 साल से छोटे को और अगर 25 साल या इस से ज़ाइद उ़म्र के बा वुजूद अम्रदे ह़सीन हो तो

उस को भी) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की इजाज़त नहीं, अगर कोई बड़ा इस्लामी भाई अपने साथ सफ़र करने के लिये इस्रार करे और सफ़र का ख़र्च भी पेश करे तो म-दनी मर्कज़ के हुक्मे मुमा-न-अ़त की त़रफ़ उस की तवज्जोह दिला दे फिर भी अगर मुसिर हो (या'नी इस्रार करे) तो उस ''बड़े'' से ख़ूब मोह़तात़ हो जाइये ۞ बड़े इस्लामी भाइयों से बेशक अलग थलग रहिये, मगर ख़्वाह म ख़्वाह किसी पर बद गुमानी कर के, ग़ीबतों, तोहमतों और म-दनी माह़ोल को ख़राब करने वाली ह़-र-कतों में पड़ कर अपनी आख़िरत दाव पर न लगाइये ۞ ईद के दिन भी लोगों से गले मिलने से बचिये, मगर किसी को झिड़किये नहीं । ह़िक्मते अ़-मली के साथ कतरा कर आगे पीछे हो जाइये, **अम्रद** भी एक दूसरे से गले न मिलें ۞ वालिदैन और नाना दादा वग़ैरा ख़ानदान के बुज़ुर्गों के इलावा किसी के सर या पाउं वग़ैरा मत दबाएं नीज़ किसी इस्लामी भाई को अपना सर या पाउं दबाने दें न हाथ चूमने दें ۞ कोई परहेज़ गार, ख़्वाह रिश्तेदार बल्कि उस्ताज़ ही क्यूं न हो एह़तियात़ इसी में है कि हर बड़े के साथ बल्कि **अम्रद** भी **अम्रद** के साथ तन्हाई से बचे । हां वालिद, सगे भाई वग़ैरा के साथ कोई मानेअ़ न हो तो तन्हाई में मुज़ा-यक़ा नहीं ۞ मद्रसे वग़ैरा में कई अफ़्राद जब एक कमरे में सोएं तो **अम्रद** व ग़ैर **अम्रद** सभी को चाहिये कि पाजामे के ऊपर तहबन्द बांध लें न हो तो कोई चादर लपेट कर **पर्दे में पर्दा** कर के, हर दो के दरमियान मुनासिब फ़ासिला रखें और मुम्किन हो तो बीच में कोई तकिया या बेग वग़ैरा बड़ी चीज़ आड़ बना लें । घर में बल्कि अकेले में भी **पर्दे में पर्दा** कर के सोने की आ़दत बनाएं, म-दनी क़ाफ़िले और इज्तिमाअ़ वग़ैरा में भी सोते वक़्त

इसी त़रह़ करें ۞ जब भी बैठें **पर्दे में पर्दा** लाज़िमी कीजिये ۞ बने संवरे रहने से इज्तिनाब फ़रमाइये । इसी रिसाले के **सफ़ह़ा** 25 ता 26 पर दी हुई इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की **ह़िकायत** की रोशनी में **अम्रद** का ह़ल्क़ करवाते (या'नी सर मुंडवाते) रहना भी मुनासिब है और अगर सुन्नत की निय्यत से ज़ुल्फ़ें रखनी हों तो आधे कान से ज़ाइद न रखे ۞ गोटा कनारी वाले जाज़िबे नज़र बड़े इमामे के बजाए सस्ते कपड़े का सादा सा छोटा इमामा शरीफ़ और वोह भी ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बांधने के बजाए क़दरे ढीला सा बांधिये ۞ इमामा शरीफ़ पर नक़्शे ना'ले पाक वग़ैरा न लगाइये कि इस त़रह़ लोगों की निगाहें उठतीं और बा'ज़ों के लिये "बद निगाही" का सामान होता है ۞ चेहरे पर **CREAM** या पाउडर हरगिज़ हरगिज़ मत लगाइये ۞ ज़रूरत हो तो ह़त्तल इम्कान सस्ते वाला सादा सा ऐनक इस्ति'माल कीजिये, धात की ख़ूब सूरत फ़्रेम लगा कर दूसरों के लिये बद निगाही के गुनाह का सबब मत बनिये ۞ बदबू से बचना ही चाहिये, लिहाज़ा इत्र बेशक लगाइये मगर वोह कि जिस की ख़ुश्बू न फैले ۞ अपने लिबास व अन्दाज़ में हर उस मुबाह़ चीज़ (या'नी जाइज़ चीज़ जिस का करना सवाब हो न गुनाह म-सलन इस्त्री किये हुए कपड़े वग़ैरा) से भी बचने की कोशिश फ़रमाइये जिस से लोग **मु-तवज्जेह** हो कर مَعَاذَاللّٰه बद निगाही के गुनाह में पड़ सकते हों । (इमामे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने अम्रद शागिर्द के लिये सर मुंडवाने और पुराना लिबास पहनाने का हुक्म फ़रमाया इसे ख़ूब ज़ेह्न में रखिये)

म-दनी इल्तिजा : वालिदैन और असातिज़ा वग़ैरा को भी चाहिये कि

मज़्कूरा म-दनी फूलों की रोशनी में **अम्रदों** को हर त़रह़ की ''टिपटॉप'' से बचने का ज़ेह्न दें ।

अम्रद का ना'त शरीफ़ पढ़ना

अम्रद को दूसरों के साथ मिल कर ना'त शरीफ़ पढ़ाने से बचना मुनासिब है । चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**'' **सफ़ह़ा** 545 पर है : **अ़र्ज़ :** मीलाद ख़्वां (या'नी ना'त शरीफ़ पढ़ने वाले) के साथ अगर **अम्रद** शामिल हों येह कैसा है ? **इर्शाद :** ''नहीं चाहिये ।'' (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 545) **काश ! अम्रद** सिर्फ़ अकेले या अपने घर के अफ़्राद ही में ना'त शरीफ़ पढ़ लिया करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ करम बालाए करम होगा । सब के सामने जब **अम्रद** ना'त शरीफ़ पढ़ता है तो बा'ज़ लोगों का बद निगाही के गुनाह से बचना इन्तिहाई मुश्किल हो जाता है और यूं भी तरन्नुम और राग से पढ़ने में एक त़रह़ का जादू होता है । **आ़शिक़े रसूल** के लिये तो अकेले में ना'त शरीफ़ पढ़ने का लुत़्फ़ ही कुछ और होता है !

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो
फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

हैंड प्रेक्टिस का अ़ज़ाब

मर्द या औ़रत का हेंड प्रेक्टिस करना **ह़राम** है, ऐसा करने वाले पर ह़दीसे मुबा-रका में ला'नत की गई है । फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बयान कर्दा एक ह़दीसे पाक में **सात** गुनहगार अफ़्राद के अ़ज़ाब का तज़्किरा है उन में एक **मुश्त ज़नी करने**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

वाला भी है कि बरोज़े क़ियामत इस पर **अल्लाह** तआ़ला न नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उसे पाक करेगा बल्कि उसे सीधा जहन्नम में जाने का हुक्म दिया जाएगा । (تَنبِیہُ الغافِلین ص۱۳۷) आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : (मुश्त ज़नी करने वाला) गुनहगार है आ़सी है, इस्रार के सबब मुर-तकिबे कबीरा है, फ़ासिक़ है । मज़ीद फ़रमाते हैं : जो मुश्त ज़नी (या'नी हेंड प्रेक्टिस Hand practice) करते हैं अगर वोह बिग़ैर तौबा किये मर गए तो बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में उठेंगे कि उन की हथेलियां गाभन (या'नी ह़ामिला) होंगी जिस से लोगों के मज्मए़ कसीर में उन की रुस्वाई होगी ।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 244)

बरबाद जवानी

गुनाहों के सैलाब की हलाकत सामानियां ! फ़ह़्ह़ाशी और उ़रयानी (या'नी बे ह़याई और बे पर्दगी) का तूफ़ान, मख़्लूत़ ता'लीमी निज़ाम, मर्दों और औ़रतों का **इख़्तिलात़** या'नी मेलजोल, **T.V.** और इन्टरनेट पर फ़िल्में, डिरामे और शह्वत अफ़्ज़ा मनाज़िर, रसाइल व जराइद के **SEX APPEAL** मज़ामीन वग़ैरा ने मिलजुल कर आज के नौ जवान को बावला बना डाला है ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : "اَلشَّبَابُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْجُنُوْن" या'नी जवानी दीवानगी ही का एक शो'बा है । (مسندُ الشّھاب ج۱ ص۱۰۰ حدیث۱۱۶) आज के नौ जवान पर शैत़ान ने अपना घेरा तंग कर दिया है, ख़्वाह वोह ब ज़ाहिर नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी ही क्यूं न हो, अपनी शह्वत की तस्कीन के लिये मारा मारा फिर रहा है, मुआ़-शरा अपने ग़लत़ रस्मो रवाज के बाइ़स बेचारे की शादी

में बहुत बड़ी दीवार बन चुका है, इम्तिह़ान, सख़्त इम्तिह़ान है, मगर इम्तिह़ान से घबराना मर्दों का शेवा नहीं। सब्र कर के अज्र लूटना चाहिये कि शह्वत जितनी ज़ियादा तंग करेगी सब्र करने पर सवाब भी उतना ही ज़ियादा मिलेगा। अगर शह्वत की तस्कीन के लिये ना जाइज़ ज़राएअ़ इख़्तियार किये तो दोनों जहानों का नुक़्सान और जहन्नम का सामान है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **''शह्वत की घड़ी भर पैरवी त़वील ग़म का बाइस होती है।''** (اَلزّھدُ الکبیر لِلْبَیْھَقی ص۱۵۷حدیث۳٤٤)

पैग़ामे ह़या

येह लिखते हुए कलेजा कांपता और ह़या से क़लम थर्राता है, मगर मेरी इन मा'रूज़ात को बे ह़याई पर मब्नी नहीं कहा जा सकता बल्कि येह तो ऐन दर्से ह़या है। **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है।''** येह ईमान रखने के बा वुजूद जो लोग अपने ज़ो'मे फ़ासिद (या'नी नाक़िस ख़याल) में ''छुप कर'' बे ह़याई का काम करते हैं उन के लिये **ह़या का पैग़ाम** है। आह ! गन्दी ज़ेहनिय्यत के ह़ामिल कई नौ जवान (लड़के और लड़कियां) शादी की राहें मस्दूद (या'नी बन्द) पा कर अपने ही हाथों अपनी **जवानी बरबाद** करना शुरूअ़ कर देते हैं। **इब्तिदाअन** अगर्चे लुत़्फ़ आता हो, मगर जब आंख खुलती (या'नी एह़सास बेदार होता) है तो बहुत देर हो चुकी होती है। याद रहे ! येह फ़े'ल ह़राम व गुनाह है और ह़दीसे पाक में ऐसा करने वाले को **''मल्ऊ़न''** कहा गया है और वोह जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब का ह़क़दार है। आख़िरत भी दाव पर लगी और दुन्या में भी इस के सख़्त तरीन नुक़्सानात हैं, इस ग़ैर फ़ित्री अ़मल से सिह़्ह़त भी तबाह व बरबाद हो कर रह जाती है।

एक बार येह "**फ़े'ल**" कर लेने के बा'द फिर करने को जी चाहता है, अगर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चन्द बार कर लिया तो वरम आ जाता है और उ़ज़्व की नर्म व नाज़ुक रगें रगड़ खा कर दब कर सुस्त हो जातीं और पठ्ठे बेह़द हुस्सास हो जाते हैं और बिल आख़िर नौबत यहां तक पहुंचती है कि ज़रा बद निगाही हुई बल्कि ज़ेह्न में तसव्वुर क़ाइम हुवा और मनी ख़ारिज, बल्कि कपड़े से रगड़ खा कर ही मनी ज़ाएअ़। "**मनी**" उस ख़ून से बनती है, जो तमाम जिस्म को ग़िज़ा पहुंचाने के बा'द बच जाता है। जब येह कसरत के साथ ख़ारिज होने लगेगी तो ख़ून बदन को ग़िज़ा कैसे फ़राहम करेगा ? **नतीजतन** जिस्म का सारा निज़ाम दरहम बरहम।

हैंड प्रेक्टिस की 26 जिस्मानी आफ़तें

《1》 दिल कमज़ोर 《2》 मे'दा 《3》 जिगर और 《4》 गुर्दे ख़राब 《5》 नज़र कमज़ोर 《6》 कानों में शाएं शाएं की आवाज़ें आना 《7》 चिड़चिड़ा पन 《8》 सुब्ह़ उठे तो बदन सुस्त 《9》 जोड़ जोड़ में दर्द और आंखें चिपकी हुईं 《10》 "मनी" पतली पड़ जाने के सबब थोड़ी थोड़ी रत़ूबत बहती रहना, नाली में रत़ूबत पड़ी रहना और सड़ना फिर इस के सबब से बा'ज़ अवक़ात ज़ख़्म हो जाना और उस में पीप पड़ जाना 《11》 शुरूअ़ में पेशाब में मा'मूली जलन 《12》 फिर मवाद निकलना 《13》 फिर जलन में इज़ाफ़ा 《14》 यहां तक कि पुराना सोज़ाक (या'नी पेशाब में जलन व पीप निकलते रहने) से ज़िन्दगी ऐसी तल्ख़ हो जाती है कि आदमी मौत की आरज़ू करने लगता है 《15》 "मनी" का पतली होने के सबब बिला किसी ख़याल

के पेशाब से पहले या बा'द पेशाब में मिल कर निकल जाना। इसी को ''जिरयान'' कहते हैं, जो शदीद तरीन अमराज़ की जड़ है ﴾16﴿ उ़ज़्व में टेढ़ा पन ﴾17﴿ ढीला पन ﴾18﴿ जड़ कमज़ोर ﴾19﴿ शादी के क़ाबिल न रहना ﴾20﴿ अगर जिमाअ़ में काम्याब भी हो गया तो औलाद की उम्मीद नहीं ﴾21﴿ कमर में दर्द ﴾22﴿ चेहरा ज़र्द ﴾23﴿ आंखों में गढ़े ﴾24﴿ शक्ल वह़शियाना ﴾25﴿ तपे दिक़ (या'नी पुराना बुख़ार जो उ़मूमन फेफड़ों के ख़राब होने की वजह से आता है। T.B.) ﴾26﴿ पागल पन।

हैंड प्रेक्टिस करने वाला हर पांचवां फ़र्द पागल

एक इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ जब एक हज़ार तपे दिक़ (T.B.) के मरीज़ों के अस्बाबे मरज़ पर ग़ौर किया गया तो येह बात सामने आई कि **414** मुश्त ज़नी के सबब, **186** कस्रते जिमाअ़ के बाइ़स और बक़िय्या दीगर वुजूहात की बिना पर मुब्तलाए **तपे दिक़** हुए थे। **124** पागलों का इम्तिह़ान करने पर मा'लूम हुवा कि इन में से **24** (या'नी तक़्रीबन हर पांचवां फ़र्द) अपने हाथ से मनी ख़ारिज करने की बिना पर **पागल** हुवा था।

www.dawateislami.net

"सब्र कर" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस गुनाह से बचने के 5 रूहानी इलाज

हुस्ने ए'तिक़ाद और अच्छी निय्यत से जो येह आ'माल बजा लाएगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हेंड प्रेक्टिस की मुसीबत से नजात पाएगा ﴾1﴿ जो भी (मर्द या औ़रत) مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस गन्दे फ़े'ल में

मुब्तला हो, वोह दो रक्अ़त **नमाज़े तौबा** अदा कर के सच्चे दिल से ताइब हो और आयन्दा येह गुनाह न करने का पक्का अ़ह्द करे और तौबा पर इस्तिक़ामत की गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगे ﴾2﴿ कसरत से रोज़े रखे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शह्वत मग़्लूब (या'नी कन्ट्रोल) होगी ﴾3﴿ मुसल्सल 41 रोज़ तक 111 बार يَامُؤْمِنُ का विर्द करे । (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़े) ﴾4﴿ सोते वक़्त लैटे हुए يَامُمِيْتُ का विर्द करते करते सो जाए । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा । (जब भी लैटे लैटे कुछ पढ़ें तो पाउं सिमटे हुए होने चाहिएं) ﴾5﴿ रोज़ाना सुब्ह़ (अव्वल आख़िर तीन बार या एक बार दुरूद शरीफ़ और) 11 बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़े, शैत़ान मअ़ लश्कर भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाह न करवा सके जब तक येह (पढ़ने वाला) ख़ुद न करे । (आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ कहलाती है)

www.dawateislami.net

"يَاكَرِيْمُ" के छ ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस गुनाह से बचने की 6 तदबीरें

﴾1﴿ **अम्रद** पसन्दी, बद निगाही और हेंड प्रेक्टिस के अ़ज़ाबात और दुन्यवी नुक़्सानात पर ग़ौर करे और ख़ुद को ख़ूब डराए ﴾2﴿ जिस को शह्वत तंग करती हो, वोह फ़ौरन शादी कर ले ﴾3﴿ शादी शुदा का परदेस में नोकरी या कारोबार वग़ैरा के लिये चार माह से ज़ियादा अपनी ज़ौजा से दूर रहना (मियां बीवी दोनों के लिये) इन्तिहाई ख़त़रनाक है, दूरी के सबब दोनों इस फ़े'ले बद में मुब्तला हो कर दुन्या व आख़िरत बरबाद कर बैठें तो **तअ़ज्जुब** नहीं । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़तावा

र-ज़विय्या जिल्द 23 **सफ़ह़ा** 388 पर फ़रमाते हैं : बिला ज़रूरत सफ़र में ज़ियादा रहना किसी को न चाहिये, **ह़दीस** में हुक्म फ़रमाया है कि ''जब काम हो चुके सफ़र से जल्द वापस आओ।'' [مُسلِم ص١٠٦٣ حديث١٩٢٧] और जो वत़न में ज़ौजा छोड़ आया हो उसे हुक्म है कि जहां तक बन पड़े **चार माह** के अन्दर अन्दर वापस आए (कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुसल्मानों को येही हुक्म फ़रमाया था) ﴾4﴿ हर उस काम व मक़ाम से बचे जिस से शह्वत को तह़रीक मिलती हो म-सलन जिन कामों या जगहों पर **अम्रदों** से वासित़ा पड़ता हो उन से दूर रहे ﴾5﴿ भाभी, ताई, चची, मुमानी, चचाज़ाद, ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद और फूफीज़ाद का शरअ़न **पर्दा** है, जो مَعَاذَاللّٰہ इन से निगाहें न बचाता हो, बे तकल्लुफ़ बनता, हंसी मज़ाक़ करता हो और शह्वत की कसरत की शिकायत भी करता हो वोह अह़मक़ों का सरदार है कि ख़ुद ही आग में हाथ डालता फिर चिल्लाता है कि बचाओ ! बचाओ ! मेरा हाथ जला जाता है ! येही ह़ाल फ़िल्में, डिरामे देखने वाले और गाने बाजे सुनने वाले का है ﴾6﴿ रूमानी नाविलें, इ़श्क़िया व फ़िस्क़िया अफ़्साने और इसी त़रह़ के अख़्बारी मज़ामीन, बल्कि ''गन्दी ख़बरों'' और औ़रतों की तस्वीरों से भरपूर अख़्बारात पढ़ने से इज्तिनाब करे। वरना बद निगाही से ख़ुद को बचाना इन्तिहाई दुश्वार और शह्वत की कसरत से बचना मुश्किल तरीन होगा । कहा जाता है : ''خود کردہ را علاجے نیست'' या'नी अपने हाथों के किये का कोई इ़लाज नहीं । (शह्वत परस्तियों और मर्द व औ़रत की हेंड प्रेक्टिस की जुदा जुदा तबाह कारियों की मज़ीद मा'लूमात के लिये ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुबल्लिगे़ इस्लाम,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب وترہیب)

ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल अ़लीम सिद्दीक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की मुख़्तसर किताब ''बहारे शबाब'' का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है
काम ज़िन्दां के किये और हमें शौक़े गुलज़ार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा ! देख सर पे तलवार है क्या होना है
उन को रह़्म आए तो आए वरना वोह कड़ी मार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, **शहन्शाहे नुबुव्वत,** मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"नामे मुह़म्मद मीठा लगता है" के अठ्ठारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से नाम रखने के बारे में 18 म-दनी फूल

❁ **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) अच्छों के नाम पर नाम रखो (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۲ ص۵۸ حديث ۲۳۲۹) (2) क़ियामत के दिन तुम को तुम्हारे और तुम्हारे बापों के नाम से पुकारा जाएगा लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखो (ابوداؤد ج٤ ص٣٧٤حديث ٤٩٤٨)

❁ **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बच्चे का अच्छा नाम रखा जाए, हिन्दूस्तान में बुहत लोगों के ऐसे नाम हैं जिन के कुछ मा'ना नहीं या उन के बुरे मा'ना हैं ऐसे नामों से एह़तिराज़ (या'नी परहेज़) करें । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्माए त़य्यिबा और सह़ाबा व ताबिई़न व बुज़ुर्गाने दीन (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के नाम पर नाम रखना बेहतर है, उम्मीद है कि इन की ब-र-कत बच्चे के शामिले ह़ाल हो (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 653) ❁ बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या मुर्दा उस की ख़िल्क़त (या'नी पैदाइश) तमाम (या'नी मुकम्मल) हो या ना तमाम (ना मुकम्मल) बहर ह़ाल उस का नाम रखा जाए और क़ियामत के दिन उस का ह़श्र होगा (या'नी उठाया जाएगा) (دُرِّمُختار ج۳ ص ۱۵۳-۱۵٤, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 841) मा'लूम हुवा जो बच्चा कच्चा गिर जाए उस का भी नाम रखा जाए । जैसा कि **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रिसाले

www.dawateislami.net

''औलाद के हुक़ूक़'' **सफ़ह़ा** 17 पर है : नाम रखे यहां तक कि कच्चे बच्चे का भी जो कम दिनों का गिर जाए वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां शाकी होगा । (या'नी शिकायत करेगा) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : कच्चे बच्चे का नाम रखो कि **अल्लाह** तआ़ला उस के ज़रीए तुम्हारी मीज़ान (या'नी अ़मल के तराज़ू) को भारी करेगा (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۲ ص۳۰۸ حدیث۳۳۹۲) ❁ ''मुह़म्मद'' नाम रखने के बारे में **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ﴿1﴾ : जिस के लड़का पैदा हो और वोह मेरी **मह़ब्बत** और मेरे नाम से ब-र-कत ह़ासिल करने के लिये उस का नाम **मुह़म्मद** रखे वोह और उस का लड़का दोनों जन्नत में जाएं (جَمْعُ الْجَوامِع ج۷ ص۲۹۵ حدیث۲۳۲۵۵) ﴿2﴾ रोज़े क़ियामत दो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे, हुक्म होगा : इन्हें जन्नत में ले जाओ । अ़र्ज़ करेंगे : इलाही عَزَّوَجَلَّ हम किस अ़मल पर जन्नत के क़ाबिल हुए ? हम ने तो जन्नत का कोई काम किया नहीं ! फ़रमाएगा : जन्नत में जाओ, मैं ने ह़लफ़ किया है कि जिस का नाम **अह़मद** या **मुह़म्मद** हो दोज़ख़ में न जाएगा (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 687, اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۵ ص۵۳۵ حدیث۹۰۰۶) ﴿3﴾ तुम में किसी का क्या नुक़्सान है अगर उस के घर में एक **मुह़म्मद** या दो **मुह़म्मद** या तीन **मुह़म्मद** हों (الطبقات الكبرى لابن سعد ج۵ ص۴۰) येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जो लिखा है उस का ख़ुलासा है : इसी लिये मैं ने अपने सब बेटों, भतीजों का अ़क़ीक़े में सिर्फ़ **मुह़म्मद** नाम रखा फिर नामे मुबारक के आदाब की

www.dawateislami.net

हिफ़ाज़त और बच्चों की पहचान हो सके इस लिये उ़र्फ़ (या'नी पुकारने वाले नाम) जुदा मुक़र्रर किये । بِحَمْدِاللّٰه **पांच मुहम्मद** अब भी मौजूद हैं जब कि पांच से ज़ाइद अपनी राह को गए या'नी वफ़ात पा चुके हैं । (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 689) **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى का अपना, वालिद साह़िब का और दादाजान का मुबारक नाम मुह़म्मद था या'नी **मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद** ۞ **औलादे नरीना के लिये अ़मल :** सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के उस्ताज़े गिरामी जलीलुल क़द्र ताबेई इमाम अ़त़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो चाहे कि उस की औ़रत के ह़म्ल में लड़का हो, उसे चाहिये अपना हाथ (ह़ामिला) औ़रत के पेट पर रख कर कहे : अगर लड़का है तो मैं ने इस का नाम **मुह़म्मद** रखा । اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْعَزِيْز लड़का ही होगा (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 690) ۞ आज कल مَعَاذَاللّٰه नाम बिगाड़ने की वबा आ़म है और **मुह़म्मद** नाम का बिगाड़ना तो बहुत ही सख़्त तक्लीफ़ देह है । लिहाज़ा हर मर्द का नाम **मुह़म्मद** या **अह़मद** रख लीजिये और उ़र्फ़ या'नी पुकारने के लिये म-सलन **बिलाल रज़ा, हिलाल रज़ा, जमाल रज़ा, कमाल रज़ा** और **ज़ैद रज़ा** वग़ैरा रख लिया जाए ۞ फ़िरिश्तों के मख़्सूस नाम पर नाम रखना दुरुस्त नहीं, लिहाज़ा किसी का जिब्रील या मीकाईल वग़ैरा नाम न रखिये । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : फ़िरिश्तों के नाम पर नाम

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

न रखो (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٣٩٤ حدیث ٨٦٣٦) ❁ मुह़म्मद नबी, अह़मद नबी, नबी अह़मद नाम रखना ह़राम है (मुलख़्ख़स़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 677) ❁ जब भी नाम रखें उस के मा'ना पर ग़ौर कर लीजिये या किसी आ़लिम से पूछ लीजिये, बुरे मा'ना वाले नाम न रखिये म-सलन ग़फ़ूरुद्दीन के मा'ना हैं : दीन का मिटाने वाला, येह नाम रखना सख़्त बुरा है ❁ बुरे नाम बुरी तासीर रखते हैं चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने बुरे नामों का सख़्त बुरा असर पड़ते अपनी आंखों से देखा है, भले चंगे सुन्नी सूरत को आख़िरे उ़म्र में "दीन पोश और नाह़क़ कोश" (या'नी दीन छुपाने वाला और बात़िल के लिये कोशिश करने वाला) होते पाया है। (मुलख़्ख़स़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 681, 682) ❁ नाम के अ-सरात आयन्दा नस्ल में भी आ सकते हैं, "बहारे शरीअ़त" जिल्द 3 सफ़ह़ा 601 पर ह़दीस नम्बर 21 है : "स़ह़ीह़ बुख़ारी" में सईद बिन **मुसय्यब** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी कहते हैं : मेरे दादा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने पूछा : तुम्हारा क्या नाम है ? उन्हों ने कहा : **ह़ज़्न**। फ़रमाया : तुम **सह्ल** हो। या'नी अपना नाम "सह्ल" रखो कि इस के मा'ना हैं नर्म और "**ह़ज़्न**" सख़्त को कहते हैं। उन्हों ने कहा कि जो नाम मेरे बाप ने रखा है उसे नहीं बदलूंगा। सईद बिन **मुसय्यब** कहते हैं : इस का नतीजा येह हुवा कि हम में अब तक सख़्ती पाई जाती है (بُخاری ج٤ ص١٥٣ حدیث٦١٩٣)

❁ **यासीन** या **त़ाहा** नाम रखना मन्अ़ है (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 680) मुह़म्मद यासीन नाम भी नहीं रख सकते हां ग़ुलाम यासीन और ग़ुलाम त़ाहा नाम रखना जाइज़ है ❁ **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 15 ''अ़क़ीक़े का बयान'' में है : **अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रह़मान** बहुत अच्छे नाम हैं मगर इस ज़माने में येह अक्सर देखा जाता है कि बजाए **अ़ब्दुर्रह़मान** उस शख़्स को बहुत से लोग **रह़मान** कहते हैं और ग़ैरे ख़ुदा को **रह़मान** कहना ह़राम है। इसी त़रह़ अ़ब्दुल ख़ालिक़ को ख़ालिक़ और अ़ब्दुल मा'बूद को मा'बूद कहते हैं इस क़िस्म के नामों में ऐसी ना जाइज़ तरमीम हरगिज़ न की जाए। इसी त़रह़ बहुत कसरत से नामों में तस्ग़ीर (या'नी छोटा करने) का रवाज है या'नी नाम को इस त़रह़ बिगाड़ते हैं जिस से ह़क़ारत निकलती है और ऐसे नामों में तस्ग़ीर (या'नी छोटाई) हरगिज़ न की जाए लिहाज़ा जहां येह गुमान हो कि नामों में तस्ग़ीर की जाएगी येह नाम न रखे जाएं दूसरे नाम रखे जाएं। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 356) ❁ जो नाम बुरे हों उन को बदल कर अच्छा नाम रखना चाहिये कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बुरे नाम को (अच्छे नाम से) बदल दिया करते थे। (ترمذی ج٤ ص٣٨٢ حدیث ٢٨٤٨) एक ख़ातून का नाम ''आ़सिया'' (या'नी गुनहगार) था, हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के नाम को बदल कर **जमीला** रखा (مُسلِم ص١١٨١ حدیث٢١٣٩) ❁ ऐसे नाम मन्अ़ हैं जिन में अपने मुंह से

ख़ुद को अच्छा बताना या'नी अपने "मुंह मियां मिठ्ठू" बनना पाया जाए । पारह 27 **सू-रतुन्नज्म** आयत नम्बर 32 में इर्शादे इलाही عَزَّوَجَلَّ है : **فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ ।" **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "फ़ुसूले इ़मादी" के ह़वाले से लिखा है : कोई उस नाम के साथ नाम न रखे जिस में तज़्किया या'नी अपनी बड़ाई और ता'रीफ़ का इज़्हार हो । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 684) मुस्लिम शरीफ़ में है : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **"बर्रह"** (या'नी नेक बीबी) नामी औ़रत का नाम बदल कर "ज़ैनब" रखा और फ़रमाया : "अपनी जानों को आप (या'नी ख़ुद) अच्छा न बताओ । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि तुम में नेकूकार कौन है" (مُسلِم ص۱۱۸۲حدیث۲۱٤۲) ❁ ऐसे नाम रखना जाइज़ नहीं जो कुफ़्फ़ार के लिये मख़्सूस हों । फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 **सफ़ह़ा** 663 ता 664 पर है : नामों की एक क़िस्म कुफ़्फ़ार से मुख़्तस (या'नी मख़्सूस) है जैसे **जिरजिस, पुत़रुस** और **यूह़न्ना** वग़ैरा लिहाज़ा इस नौअ़ (या'नी क़िस्म) के नाम मुसल्मानों के लिये रखने जाइज़ नहीं क्यूं कि इस में कुफ़्फ़ार से मुशा-बहत पाई जाती है । وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَم ❁ ग़ुलाम मुह़म्मद और अह़मद जान नाम रखना जाइज़ है मगर बेहतर येही है कि ग़ुलाम या जान वग़ैरा लफ़्ज़ न बढ़ाया जाए । ताकि **मुह़म्मद** और **अह़मद** नाम के जो फ़ज़ाइल अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद हैं वोह ह़ासिल हों । ❁ ग़ुलाम रसूल, ग़ुलाम सिद्दीक़, ग़ुलाम अ़ली, ग़ुलाम ह़ुसैन, ग़ुलाम ग़ौस, ग़ुलाम रज़ा नाम रखना जाइज़ है ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

6 रबीउ़न्नूर 1433 हि. **30-1-2012**

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1
इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के भतीजे	1
दुन्या में सब से पहले शैत़ान ने बद फ़े'ली करवाई	2
सय्यिदुना लूत़ ने समझाया	2
क़ौमे लूत़ पर लरज़ा ख़ैज़ अ़ज़ाब नाज़िल हो गया	3
पथ्थर ने पीछा किया !	5
सुअर इग़्लाम बाज़ होता है	6
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा गुनाह	6
तीन त़रह़ के अम्रद परस्त	7
सुलगती लाशें	7
अम्रद भी जहन्नम का ह़क़दार !	8
क़ौमे लूत़ के क़ब्रिस्तान में	8
इग़्लाम बाज़ की दुन्या में सज़ा	8
बद फ़े'ली को जाइज़ समझना कैसा ?	9
"काश ! बद फ़े'ली जाइज़ होती" कहना कुफ़्र है	9
पेश इमाम की करामत	10
ह़ाफ़िज़े की तबाही का एक सबब	11
दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी	12
चेहरे का गोश्त झड़ गया	13
शह्वत से लिबास देखना भी ह़राम	14
ख़ौफ़नाक सांप की ज़र्ब	15
शह्वत परस्ती के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़	15
बोसा लेने का अ़ज़ाब	16
बद निगाही से शक्ल बिगड़ सकती है	17
क़ब्र में कीड़े सब से पहले तेरी आंख खाएंगे	17
नज़र की हिफ़ाज़त करने वाले के लिये जहन्नम से अमान है	18
इब्लीस का ज़हरीला तीर	18
अम्रद के साथ तन्हाई सात दरिन्दों से भी ज़ियादा ख़त़रनाक	19
अम्रद औ़रत से भी ख़त़रनाक है !	19
अम्रद के साथ 17 शयात़ीन	20
अम्रद "आग" है	20
अम्रद के साथ 70 शैत़ान	21
अम्रद भान्जे को साथ ले कर न निकलो !	21
परहेज़ गार भी फंस जाते हैं	22
अम्रद के फ़ितने से बचो	22
शह्वत की पहचान	23
शह्वत से बचने के 12 म-दनी फूल	23
भीड़ में किसी को भी घुसना नहीं चाहिये !	24
इमामे आ'ज़म का अम्रद के बारे में त़र्ज़े अ़मल	25
अम्रद की पहचान	26
अम्रद को तोह़फ़ा देना कैसा ?	27
अम्रद के लिये एह़तियात़ के 19 म-दनी फूल	28
अम्रद का ना'त शरीफ़ पढ़ना	31
हेंड प्रेक्टिस का अ़ज़ाब	31
बरबाद जवानी	32
पैग़ामे ह़या	33
हेंड प्रेक्टिस की 26 जिस्मानी आफ़तें	34
हेंड प्रेक्टिस करने वाला हर पांचवां फ़र्द पागल	35
इस गुनाह से बचने के 5 रूह़ानी इ़लाज	35
इस गुनाह से बचने की 6 तदबीरें	36
नाम रखने के बारे में 18 म-दनी फूल	39

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن پاک	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الطبقات الکبریٰ لابن سعد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر روح البیان	داراحیاء التراث العربی بیروت	مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر الصاوی	دارالفکر بیروت	نزہۃ المجالس	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیرات احمدیہ	پشاور	عجائب القرآن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	المناقب للکردری	کوئٹہ
نور العرفان	پیر بھائی اینڈ کمپنی	الزواجر عن اقتراف الکبائر	دارالمعرفۃ بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	درمختار	دارالمعرفۃ بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	تاریخ دمشق لابن عساکر	دارالفکر بیروت
سنن ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	تنبیہ الغافلین	دارالکتاب العربی بیروت
سنن ترمذی	دارالفکر بیروت	الروض الفائق	داراحیاء التراث العربی بیروت
السنن الکبریٰ للبیہقی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	منح الروض	دارالبشائر الاسلامیہ
مسند الشہاب	مؤسسۃ الرسالہ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الفردوس بماثور الخطاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	البحر الرائق	کوئٹہ
الزہد الکبیر	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ بیروت	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ تہران
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ تہران
جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
شذرات الذہب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی